B.A. (Hons) Part II
Philosophy - Paper III
Topic _ Short Notes on "Right and wrong"

Dr. Sachidanand Prasad.
Department of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

नीतिशास्त्र का संबंध मानव आचरण से है। किसी भी व्यक्ति के आचरण के नैतिक मूल्यांकन में उचित - अनुचित, शुभ-अशुभ इत्यादि प्रत्ययों का ही प्रयोग होता है। यदि किसी व्यक्ति का स्वैच्छिक कर्म नैतिक आदर्श के अनुकूल हो तो उसे उचित (Right) या शुभ (Good) कहा जाता है और यदि विपरित हो तो उसे अनुचित (Wrong) या अशुभ (Evil) कहा जाता है।
(Right) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'rectus' से हुई है जिसका अर्थ होता है - सीधा या नियमानुसार। इसलिए वह जो किसी नियम के अनुकूल हो उसे Right कहा जायेगा।
'Wrong' शब्द की उत्पत्ति wring से हुई है जिसका अर्थ होता है ऐंठा हुआ, टेढ़ा या जो नियमानुसार नहीं हो। इसप्रकार

वह जो किसी नियम के अनुकूल न हो अर्थात् किसी नियम से असंगति हो, उसे Wrong कहा जायेगा। इसप्रकार हमलोग यह कह सकते हैं कि Right और Wrong दोनों ही नियम के संकेत करते हैं।

इसप्रकार यदि मानव आचरण नैतिक मापदण्ड या नियम के अनुकूल हुआ तो वह नैतिक दृष्टि से उचित (Right) और यदि नैतिक नियम के विपरीत हुआ तो नैतिक दृष्टि से अनुचित (Wrong) होगा। अतः नैतिक नियम ही उचित या अनुचित आचरण का मापदण्ड या निर्णायक है और इसी से तुलना करके यह निर्णय किया जाता है कि आचरण उचित है या अनुचित। चूँकि नैतिक नियम देश और काल के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं इसलिए उचित या अनुचित कर्मों का विचार भी बदलता रहता है। नैतिक नियम मनुष्य के परम शुभ की प्राप्ति का साधन है इसलिए उन नियमों के पालन से परम शुभ या जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।